ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-2* Issue-9* December- 2017
Anthology : The Research

हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में नारी चेतना

मीना प्रसाद
विभागाध्यक्ष,
भूगोल विभाग,
शा. वि. या. ता स्वशासी
स्नातकोत्तर महा.,
दुर्ग, छ.ग.

सारांश

प्राचीन काल से ही नारी के विभिन्न रूपों का वर्णन होता रहा है यही कारण है कि हिन्दी साहित्यकारों ने अपने साहित्य में भी नारी के विभिन्न रूपों का वर्णन किया है। उन्हीं साहित्यकारों में एक नाम है – हजारी प्रसाद द्विवेदी। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने उपन्यासों में नारी के विभिन्न रूपों का वर्णन किया है। उनकी रचना का उद्देश्य नारी महिमा का ज्ञान और उसका आत्मोत्थान है।

मुख्य शब्द : Please Add some keywords

प्रस्तावना

द्विवेदी जी ने नारी के सुप्त देवता को जाग्रत किया है। उनके नारी पात्र आत्मजीवी है। बाणभट्ट की आत्मकथा का एक स्मरणीय और गतिशील पात्र निपुणिका है। वह साधारण वर्ग की विधवा है। उसका चरित्रोत्थान संपूर्ण उपन्यास जगत में अनूठा है। निपुणिका का समस्त जीवन अदम्य साहस एवं जीवन का परिचायक है। अपने घर से भागकर वह जब अपने जीवन यापन के लिये संघर्ष करती है तो उसे अपने सतीत्व की रक्षा के लिये बहुत कुछ सहना पड़ता है, क्योंकि इस विलास प्रधान समाज में जहाँ पर पुरूष नारी पर भेड़ियों की तरह टूटता है वहीं निपुणिका जैसी साहसी स्त्री भी है जो अपने सतीत्व की रक्षा स्वयं कर सकती है यही नहीं जब उसे भट्टिनी की विपत्ति का पता चलता है तो वह उसके उद्धार के लिये अपने प्राणों की बाजी लगाने से भी पीछे नहीं हटती है। निपुणिका के सम्पूर्ण चरित्र में उपन्यासकार ने नारी मुक्ति की आकांक्षा को व्यंजित किया है। ''नारी के साथ किया गया अपमान उसे (निपुणिका) तिलमिला देता है। वह बाणभट्ट का बहुत सम्मान करती है क्योंकि नारी पर की गई अननुकुल टीकाओं को सहन नहीं कर सकता।''[1] बाणभट्ट का मानना है कि ''नारी सौंदर्य को संसार की सबसे अधिक प्रभावोत्पादिनी शक्ति है।''[2] निपुणिका के चरित्र को द्विवेदी जी ने बड़ी कुशलता से गढ़ा है। आज समाज में निपुणिका जैसी साहसी , निडर और त्यागमयी स्त्रियों की आवश्यकता है, जो अबलापन से उभरकर इस पुरूष प्रधान समाज में अस्तित्व चेतना को जागृत किये हुये हैं। बाणभट्ट की एक अन्य पात्र महामाया है वह एक सन्यासिनी भैरवी है किन्तु अपने गुणों के कारण सामाजिक सरोकार से जुड़ी हुई जनजागरण का प्रतीक बनकर उभरी है। बाणभट्ट की आत्मकथा में द्विवेदी जी के नारी शक्ति के विभिन्न रूपों को चित्रित किया है प्रेमिका के रूप में भट्टिनी और निपुणिका, पत्नी के रूप में सुचरिता, सन्यासी के रूप में महामाया और गणिका के रूप में मदनश्री। नारी शक्ति को विकसित करने वाले सभी अविस्मरणीय पात्र है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी की दृष्टि में नारी परिवार की परिधि ही नहीं होती है बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरूष के साथ कदम से कदम मिलाने की क्षमता भी रखती है। 'चारूचंद्रलेखा' की रानी चंद्रलेखा और मैना इसी तरह की स्त्री पात्र हैं। जो युद्ध में अपूर्व कौशल प्रदर्शित करती हैं। यही नहीं अपितु ग्राम वधुऐं तक दुश्मनों का सामना करने के लिये संघर्षरत दिखाई देती है। ''चारूचंद्रलेख में रानी चंद्रलेखा को बत्तीस गुणों से युक्त बताया है तो मैना साहसमयी और संयम मूर्ति नारी है।''[3] वह अपने बुद्धि कौशल से राज्य की रक्षा के लिये अपने प्राणों की चिन्ता न करते हुए शत्रुओं के दांत खट्टे कर देती है। मैना जैसी तेजस्वी नारी में

राष्ट्र प्रेम कूट–कूटकर भरा है। वह अपने अन्दर सेवा और समर्पण भाव से परिपूर्ण होते हुए एक सचेतन नारी का प्रतिनिधित्व करती है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'पुनर्नवा' उपन्यास में अनमेल विवाह को दर्शाया है। उपन्यास में चंद्रा का उदाहरण एक ऐसी स्त्री की कहानी कहता है जिसका विवाह किसी क्लीव श्रीचंद कर देते हैं जो शादी के योग्य न होकर क्रूर भी है। वह इस संबंध में अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहती है कि ''मेरा विवाह मेरी इच्छा के विरूद्ध मेरे पिता ने एक ऐसे मनुष्य रूपधारी पशु से कर दिया जो पुरूष है ही नहीं। मैं उसे पति नहीं मान सकती, हलद्वीप के मुँह में कालिख लगती है तो सौ बार लगे।''[4] यहाँ पर द्विवेदी जी ने चंद्रा के माध्यम से ऐसी बात कही है जो एक दृष्टिकोण तथा मौलिक विचार प्रस्तुत करता है।

इसी प्रकार 'अनामदास का पोथा' में हजारी प्रसाद द्विवेदी ऋतंभरा का चित्रण नारी के लिये उच्च आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया है। ऋतंभरा एक ऐसी प्रभा राशि है जिससे पोथा का प्रत्येक पात्र प्रकाशित होता है वह सरस्वती रूपा, धर्मपरायण, समाजसेवा व्रती नारी है। ''जाबाला भी एक विदुषी और स्वावलंबी नारी है।''[5] द्विवेदी जी जाबाला के माध्यम से यह स्पष्ट करते हैं कि परिस्थितियाँ कैसी भी हों एक स्त्री अपने अस्तित्व और मर्यादा की रक्षा के लिये डटकर मुकाबला करने का साहस रखती है। क्योंकि वह जानती है कि जो स्त्री अपने स्वयं की रक्षा नहीं कर सकती, वह किसी और की रक्षा कैसे कर सकती है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि हजारी प्रसाद द्विवेदी के सभी उपन्यासों के सभी नारी पात्र महिमा मंडित है हिन्दी उपन्यास ने नारी के सतत् विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है उसने नारी को अधिकार बोध कराके उसे वाणी दी है आज की नारी अपनी शक्ति को समझने में सक्षम है। वह विषमताओं से लोहा लेने में तत्पर है।

संदर्भ ग्रन्थ सूंची

1. *बाणभट्ट की आत्मकथा, पृष्ठ 16*
2. *उपरिवत्*
3. *चारूचंद्रलेख, पृष्ठ 16*
4. *पुनर्नवा , पृष्ठ 153*
5. *अनामदास का पोथा*